Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

शोधार्थी
अशोक कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (बी० एड०)

सहायक शोध निर्देशक
प्रो० (डॉ०) विजय कुमार राय
आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग, (बी०एड०)
हीरालाल रामनिवास स्नातकोत्तर महाविद्यालय खलीलाबाद, संत कबीरनगर (उ० प्र०)

शोध निर्देशक
डॉ० शैलेन्द्र कुमार उपाध्याय
सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा संकाय (बी० एड०)
श्री दुर्गा जी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चण्डेश्वर, आजमगढ़

https://doi.org/10.5281/zenodo.23253867

सारांश

शैक्षिक अभिप्रेरणा विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक है। यह वह आंतरिक अथवा बाह्य शक्ति है जो विद्यार्थी को अध्ययन के प्रति रुचि विकसित करने, निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास करने तथा कठिन परिस्थितियों में भी सीखने की प्रक्रिया को निरंतर बनाए रखने के लिए प्रेरित करती है। अभिप्रेरित विद्यार्थी सामान्यतः अपने अध्ययन के प्रति अधिक जागरूक रहते हैं तथा शैक्षिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करते हैं। शैक्षिक अभिप्रेरणा का संबंध विद्यार्थी की सीखने की इच्छा, लक्ष्य-निर्धारण, आत्मविश्वास, सफलता की अपेक्षा तथा उपलब्धि प्राप्त करने की आकांक्षा से होता है। जब विद्यार्थी किसी विषय या अध्ययन कार्य को अर्थपूर्ण और उपयोगी समझता है, तो उसमें सीखने के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित होने की संभावना बढ़ जाती है। इसके विपरीत अभिप्रेरणा के अभाव में विद्यार्थी अध्ययन के प्रति उदासीनता, अरुचि और निष्क्रियता प्रदर्शित कर सकता है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थी द्वारा शैक्षिक प्रक्रिया के माध्यम से अर्जित ज्ञान, समझ, कौशल और दक्षता का महत्वपूर्ण संकेतक है। यह केवल परीक्षा में प्राप्त अंकों तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थी की सीखने की क्षमता, विषय-वस्तु की समझ, समस्या-समाधान क्षमता तथा शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति को भी प्रतिबिंबित करती है। विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि पर उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं के साथ-साथ पारिवारिक, सामाजिक, विद्यालयी और शैक्षिक वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है।

मुख्य शब्द: शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उपलब्धि, माध्यमिक स्तर, ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी,

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज के विकास की आधारशिला है और माध्यमिक स्तर इस व्यवस्था का वह मोड़ है जहाँ विद्यार्थी का आगे का शैक्षिक और व्यावसायिक मार्ग काफी हद तक तय होता है। इस अवस्था में बौद्धिक क्षमता के साथ सीखने की इच्छा और लगन, अर्थात अभिप्रेरणा, भी उतनी ही आवश्यक है। अभिप्रेरणा वह आन्तरिक शक्ति है जो व्यक्ति के व्यवहार को आरम्भ करती है, उसे दिशा देती है और लक्ष्य प्राप्ति तक उसे बनाए रखती है (मंगल, 2002)। जब यह शक्ति अध्ययन, कक्षा-कार्य और परीक्षा जैसे शैक्षिक लक्ष्यों की ओर उन्मुख होती है, तो उसे शैक्षिक अभिप्रेरणा कहा जाता है। रायन एवं डेसी (2000) के अनुसार अभिप्रेरित होने का अर्थ है किसी कार्य को करने के लिए प्रेरित होना, और यह प्रेरणा भीतर से भी आ सकती है तथा बाहरी पुरस्कार या दबाव से भी। भारत में ग्रामीण और शहरी विद्यालयों के संसाधनों में अंतर लम्बे समय से चर्चा का विषय रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी समान और समावेशी शिक्षा को प्रमुख लक्ष्य माना है तथा सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों के सीखने के अंतर को कम करने पर बल दिया है (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 2020)। ऐसे में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धि का अंतर उनकी

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

अभिप्रेरणा के अंतर से आता है, या अभिप्रेरणा समान होने पर भी परिस्थितियाँ परिणाम को प्रभावित करती हैं। प्रस्तुत अध्ययन इसी प्रश्न की पड़ताल करता है।

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

शैक्षिक अभिप्रेरणा की अवधारणा

अभिप्रेरणा पर प्रारम्भिक सिद्धांतों में मास्लो (1943) का आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत प्रमुख है, जिसके अनुसार शारीरिक एवं सुरक्षा सम्बन्धी आवश्यकताएँ पूरी होने के बाद ही व्यक्ति सम्मान और आत्म-सिद्धि जैसी उच्च आवश्यकताओं की ओर बढ़ता है। मैक्लेलैंड एवं अन्य (1953) ने उपलब्धि-आवश्यकता की अवधारणा दी और बताया कि कुछ व्यक्ति उत्कृष्टता के मानकों तक पहुँचने के लिए स्वाभाविक रूप से अधिक प्रयास करते हैं। एटकिंसन (1964) ने इसे आगे बढ़ाते हुए सफलता की आशा और असफलता के भय को उपलब्धि-व्यवहार के दो प्रमुख निर्धारक माना।

आधुनिक शैक्षिक मनोविज्ञान में आत्म-निर्धारण सिद्धांत सबसे अधिक प्रयुक्त ढाँचों में से एक है। डेसी एवं रायन (1985) ने अभिप्रेरणा को एक सातत्य के रूप में देखा, जिसके एक छोर पर आन्तरिक अभिप्रेरणा (कार्य में निहित आनन्द और जिज्ञासा), बीच में बाह्य अभिप्रेरणा (अंक, पुरस्कार, प्रशंसा या दण्ड से बचाव) और दूसरे छोर पर अभिप्रेरणा-हीनता (कार्य का कोई अर्थ न दिखना) स्थित है। इसी सिद्धांत के आधार पर वेलेरैंड एवं अन्य (1992) ने शैक्षिक अभिप्रेरणा मापनी विकसित की, जो आन्तरिक, बाह्य और अभिप्रेरणा-हीनता के सात उप-आयामों को मापती है। प्रत्याशा-मूल्य सिद्धांत के अनुसार विद्यार्थी किसी कार्य में कितना प्रयास करेगा, यह इस पर निर्भर करता है कि वह सफलता की कितनी आशा रखता है और उस कार्य को कितना मूल्यवान मानता है (विगफील्ड एवं एक्लेस, 2000; एक्लेस एवं विगफील्ड, 2002)। बंडूरा (1997) के अनुसार स्वयं को सक्षम मानने वाला विद्यार्थी कठिन कार्य से पीछे नहीं हटता।

शैक्षिक उपलब्धि की अवधारणा

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य उस ज्ञान, कौशल और समझ से है जो विद्यार्थी औपचारिक शिक्षण के परिणामस्वरूप अर्जित करता है और जिसका मापन विद्यालयी परीक्षाओं या मानकीकृत उपलब्धि परीक्षणों द्वारा किया जाता है। सिरिन (2005) के मेटा-विश्लेषण ने सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शैक्षिक उपलब्धि के बीच मध्यम स्तर का सम्बन्ध पाया, जो ग्रामीण-शहरी तुलना के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक है।

अभिप्रेरणा और उपलब्धि का सम्बन्ध

अभिप्रेरणा और उपलब्धि का सम्बन्ध दोतरफा माना जाता है। अभिप्रेरित विद्यार्थी अधिक प्रयास करता है जिससे उपलब्धि बढ़ती है, और अच्छे अंक पुनः अभिप्रेरणा को मजबूत करते हैं। स्टाइनमायर एवं स्पिनाथ (2009) ने पाया कि बुद्धि को नियंत्रित करने के बाद भी अभिप्रेरणा सम्बन्धी चर विद्यालयी उपलब्धि के अतिरिक्त अंश की व्याख्या करते हैं।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

स्टाइनमायर एवं स्पिनाथ (2009) ने जर्मनी के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में उपलब्धि-अभिप्रेरणा, आत्म-धारणा, लक्ष्य-अभिमुखता और कार्य-मूल्यों को उपलब्धि के पूर्वकथक के रूप में परखा। उनके निष्कर्षों के अनुसार योग्यता सम्बन्धी आत्म-धारणा और कार्य-मूल्य ने गणित और जर्मन भाषा दोनों में उपलब्धि की सार्थक व्याख्या की, तथा यह प्रभाव बुद्धि के प्रभाव से अलग था। पयन्नाट एवं मणिचंदर (2012) ने केरल के एर्नाकुलम जिले के 200 माध्यमिक विद्यार्थियों पर देव-मोहन उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी का प्रयोग किया। t-परीक्षण द्वारा उन्होंने पाया कि ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धि-अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर है, और यह अंतर ग्रामीण एवं शहरी छात्रों तथा ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की अलग-अलग तुलना में भी दिखाई दिया। परमार (2017) ने गुजरात के मेहसाणा जिले के 60 माध्यमिक विद्यार्थियों (30 ग्रामीण, 30 शहरी) की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना की। अध्ययन में ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं मिला।

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

सेनगुप्ता एवं गुच्छाइत (2024) ने पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले में प्रथम पीढ़ी के ग्रामीण विद्यार्थियों पर मिश्रित विधि से अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि प्रारम्भिक स्तर से माध्यमिक स्तर तक आते-आते शैक्षिक अभिप्रेरणा में क्रमिक गिरावट आती है, और इस गिरावट का सम्बन्ध परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, घरेलू वातावरण तथा विद्यालय की गुणवत्ता से है। सिरिन (2005) के 58 अध्ययनों पर आधारित मेटा-विश्लेषण में सामाजिक-आर्थिक स्थिति और उपलब्धि के बीच मध्यम सम्बन्ध मिला, जो विद्यालय के स्थान के अनुसार बदलता है। असर सेंटर (2023) की रिपोर्ट भी ग्रामीण विद्यार्थियों के बुनियादी पठन और गणितीय कौशल में उल्लेखनीय कमी दर्शाती है।

उपर्युक्त अध्ययनों से स्पष्ट है कि अभिप्रेरणा और उपलब्धि के सम्बन्ध पर सहमति अधिक है, परंतु ग्रामीण-शहरी अंतर के परिणाम मिश्रित हैं। महाराजगंज- विभिन्न क्षेत्रों में इन दोनों चरों पर एक साथ अध्ययन बहुत कम हैं। यही शोध-अंतराल प्रस्तुत अध्ययन का आधार है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

माध्यमिक स्तर पर विद्यालय छोड़ने की दर और बोर्ड परीक्षा में असफलता की समस्या अब भी गम्भीर है। यदि यह ज्ञात हो सके कि उपलब्धि का अंतर अभिप्रेरणा की कमी से है या संसाधनों की कमी से, तो शिक्षक, प्रधानाचार्य और नीति-निर्माता सही दिशा में प्रयास कर सकते हैं।

समस्या कथन

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन"

पदों की क्रियात्मक परिभाषा

- **माध्यमिक स्तर:** से आशय उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से सम्बद्ध विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से है। प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा 10 में अध्ययनरत विद्यार्थी सम्मलित किए गए है।
- **शैक्षिक अभिप्रेरणा:** शैक्षिक अभिप्रेरणा से आशय विद्यार्थी की उस आंतरिक एवं बाहरी प्रेरणा से है, जो विद्यार्थी को अधिगम और अध्ययन करने के लिए प्रेरित करती है।
- **शैक्षिक उपलब्धि:** कक्षा 9 की वार्षिक परीक्षा में विद्यार्थी द्वारा प्राप्त कुल अंकों का प्रतिशत।
- **ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी:** ग्राम पंचायत क्षेत्र के विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थी ग्रामीण तथा नगर पालिका सीमा के विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थी शहरी माने गए।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

उद्देश्यों के अनुरूप निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ निर्मित की गईं, जिनका परीक्षण .05 सार्थकता स्तर पर किया गया:

- H_{o1}: माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
- H_{o2}: माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- H_{o3}: माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के महाराजगंज जिले तथा उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से सम्बद्ध शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के कक्षा 10 के 200 विद्यार्थियों तक सीमित है। शैक्षिक उपलब्धि का मापन केवल कक्षा 9 की वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांक प्रतिशत से किया गया।

शोध प्रविधि

शोध विधि

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया, क्योंकि इसका उद्देश्य वर्तमान स्थिति का वर्णन करना तथा चरों के बीच सम्बन्ध और समूहों के बीच अंतर ज्ञात करना है। शैक्षिक अभिप्रेरणा स्वतंत्र चर, शैक्षिक उपलब्धि आश्रित चर तथा क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) वर्गीकरण चर के रूप में लिया गया।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

महाराजगंज जिले के माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 10 में अध्ययनरत सभी विद्यार्थी अध्ययन की जनसंख्या हैं। स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा 10 विद्यालय (5 ग्रामीण, 5 शहरी) चुने गए और प्रत्येक विद्यालय से 20 विद्यार्थियों (10 छात्र, 10 छात्राएँ) का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। न्यादर्श का वितरण तालिका 1 में दिया गया है।

तालिका 1:

न्यादर्श का क्षेत्र एवं लिंग के आधार पर वितरण

क्षेत्र	छात्र	छात्राएँ	योग
ग्रामीण	50	50	100
शहरी	50	50	100
योग	**100**	**100**	**200**

स्रोत: शोधार्थी द्वारा संकलित प्राथमिक प्रदत्त

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में शैक्षिक अभिप्रेरण के लिए के० एस० मिश्रा द्वारा निर्मित शैक्षिक अभिप्रेरणा इन्वेंटरी का प्रयोग किया गया है। शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन हेतु कक्षा 9 की वार्षिक परीक्षा में विद्यार्थी द्वारा प्राप्त कुल अंकों का प्रतिशत को लिया गया ह। न्यादर्श के रूप में कुल 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

प्रदत्त संकलन एवं सांख्यिकीय प्रविधियाँ

विद्यालय प्रधानाचार्यों की अनुमति लेकर कक्षा में मापनी प्रशासित की गई। उपलब्धि के अंक विद्यालय के परीक्षा अभिलेखों से लिए गए। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, विषमता एवं ककुदता, शापिरो-विल्क सामान्यता परीक्षण, पियर्सन गुणनफल-आघूर्ण सहसम्बन्ध, लेवेन परीक्षण, स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण, एकमार्गी ANOVA, टुकी पश्च-परीक्षण तथा काई-वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया गया (गैरेट, 1981; फील्ड, 2013)। प्रभाव-आकार की व्याख्या कोहेन (1988) के मानदण्डों के अनुसार की गई।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

वर्णनात्मक सांख्यिकी एवं सामान्यता

तालिका 2

शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि की वर्णनात्मक सांख्यिकी

चर / समूह	N	मध्यमान	मा.वि.	न्यूनतम	अधिकतम	विषमता	ककुदता
शैक्षिक अभिप्रेरणा							
ग्रामीण	100	133.61	17.22	94.0	179.0	0.04	-0.23
शहरी	100	138.01	15.00	95.0	178.0	0.12	0.34
कुल	200	135.81	16.26	94.0	179.0	0.02	0.02
शैक्षिक उपलब्धि (%)							
ग्रामीण	100	61.90	11.05	33.0	86.9	-0.16	-0.25
शहरी	100	67.05	10.69	42.1	98.0	0.41	0.17

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

चर / समूह	N	मध्यमान	मा.वि.	न्यूनतम	अधिकतम	विषमता	ककुदता
कुल	200	64.48	11.14	33.0	98.0	0.08	0.16

स्रोत: शोधार्थी द्वारा संकलित प्राथमिक प्रदत्त

तालिका 3 से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण न्यादर्श का शैक्षिक अभिप्रेरणा मध्यमान 135.81 (मा.वि. = 16.26) है, जो मापनी के मध्य-बिंदु (112) से ऊपर है। शैक्षिक उपलब्धि में यह अंतर अधिक स्पष्ट है: शहरी विद्यार्थियों का औसत प्रतिशत 67.05 और ग्रामीण विद्यार्थियों का 61.90 है। दोनों चरों के विषमता और ककुदता मान ±1 की सीमा के भीतर हैं। शापिरो-विल्क परीक्षण भी सामान्यता की पुष्टि करता है (अभिप्रेरणा: W = 0.996, p = 0.873; उपलब्धि: W = 0.997, p = 0.959)। अतः प्राचलिक परीक्षणों का प्रयोग उचित है।

परिकल्पना H_{o1} का परीक्षण: अभिप्रेरणा एवं उपलब्धि का सम्बन्ध

तालिका 3

शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य पियर्सन सहसम्बन्ध

समूह	N	df	r	r^2	p-मान	परिणाम
ग्रामीण	100	98	0.417	0.174	< .001	.01 स्तर पर सार्थक
शहरी	100	98	0.434	0.188	< .001	.01 स्तर पर सार्थक
कुल	200	198	0.440	0.194	< .001	.01 स्तर पर सार्थक

नोट: df = 198 पर r का क्रांतिक मान .05 स्तर पर 0.139 तथा .01 स्तर पर 0.181 है। स्रोत: शोधार्थी द्वारा संकलित प्राथमिक प्रदत्त

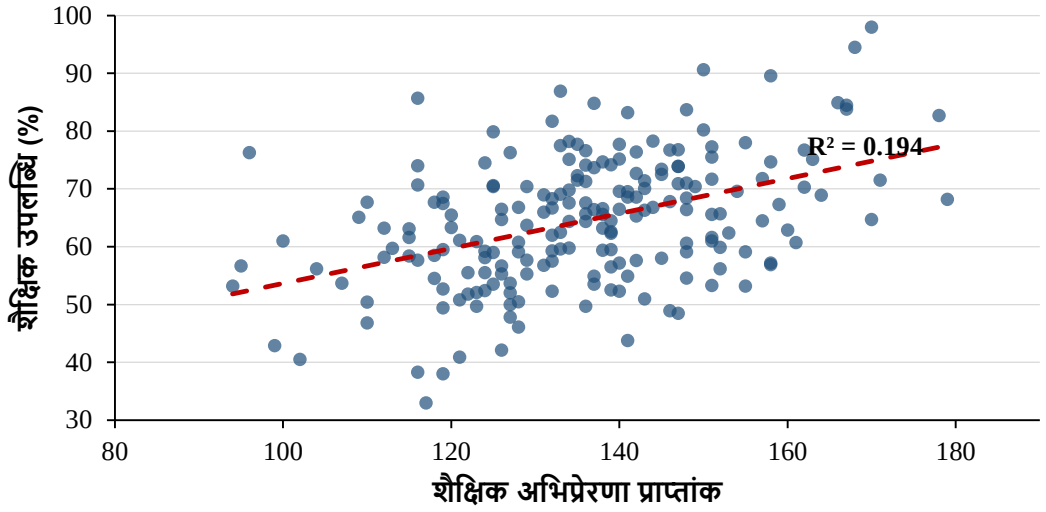
तालिका 4 के अनुसार सम्पूर्ण न्यादर्श में शैक्षिक अभिप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सहसम्बन्ध गुणांक r = 0.440 है, जो df = 198 पर .01 स्तर के क्रांतिक मान 0.181 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना H_{o1} अस्वीकृत की जाती है। यह सहसम्बन्ध धनात्मक और मध्यम स्तर का है (कोहेन, 1988)। निर्धारण गुणांक r^2 = 0.194 बताता है कि उपलब्धि के कुल प्रसरण का लगभग 19.4 प्रतिशत भाग अभिप्रेरणा से जुड़ा है। ग्रामीण (r = 0.417) और शहरी (r = 0.434) दोनों समूहों में सम्बन्ध लगभग समान है, जो यह दर्शाता है कि अभिप्रेरणा का लाभ दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों को मिलता है। आकृति 1 में प्रकीर्ण आरेख और रैखिक प्रवृत्ति रेखा यही प्रवृत्ति दिखाते हैं; प्रतिगमन समीकरण के अनुसार अभिप्रेरणा के प्रत्येक 10 अंकों की वृद्धि पर उपलब्धि में लगभग 3.0 प्रतिशत अंकों की वृद्धि होती है।

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com



आकृति 1: शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि का प्रकीर्ण आरेख (N = 200)

अभिप्रेरणा और उपलब्धि की तुलना को और स्पष्ट करने के लिए विद्यार्थियों को मध्यमान ± 1 मानक विचलन के आधार पर तीन स्तरों में बाँटा गया: निम्न (< 120), औसत (120–152) और उच्च (> 152)। तीनों समूहों की उपलब्धि की तुलना एकमार्गी ANOVA द्वारा की गई (तालिका 5)।

तालिका 4

अभिप्रेरणा स्तर के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि का एकमार्गी प्रसरण विश्लेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्गों का योग	df	माध्य वर्ग	F	p	η²
समूहों के मध्य	3076.53	2	1538.27	14.01	< .001	0.124
समूहों के भीतर	21636.70	197	109.83			
योग	24713.23	199				

स्रोत: शोधार्थी द्वारा संकलित प्राथमिक प्रदत्त

तालिका 5

टुकी पश्च-परीक्षण: अभिप्रेरणा स्तरों के मध्य उपलब्धि का युग्मवार अंतर

तुलना	मध्यमान अंतर	95% विश्वास्यता अंतराल	p-मान	परिणाम
औसत बनाम निम्न	6.63	1.84 से 11.42	0.004	सार्थक
उच्च बनाम निम्न	14.39	7.97 से 20.81	< .001	सार्थक
उच्च बनाम औसत	7.76	2.56 से 12.96	0.002	सार्थक

स्रोत: शोधार्थी द्वारा संकलित प्राथमिक प्रदत्त

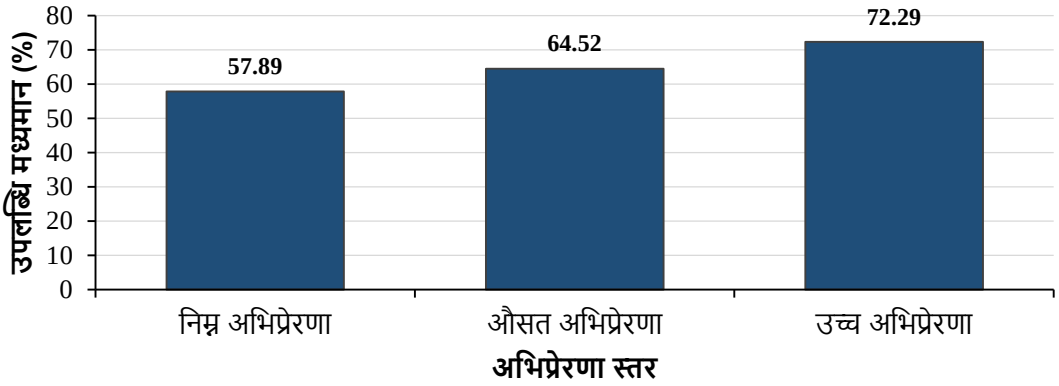
तालिका 5 में $F(2, 197) = 14.01$, $p < .001$ है, अतः तीनों अभिप्रेरणा स्तरों की उपलब्धि में सार्थक अंतर है। $\eta^2 = 0.124$ मध्यम प्रभाव-आकार दर्शाता है। उच्च अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थियों की औसत उपलब्धि 72.29 प्रतिशत है, जबकि निम्न अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थियों की केवल 57.89 प्रतिशत; यानी लगभग 14.4 प्रतिशत अंकों का अंतर। टुकी पश्च-परीक्षण (तालिका 6) के अनुसार तीनों युग्मों के अंतर सार्थक हैं, अर्थात अभिप्रेरणा का स्तर बढ़ने के साथ उपलब्धि क्रमशः बढ़ती है। यह क्रमिक वृद्धि आकृति 2 में स्पष्ट है।

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com



आकृति 2: अभिप्रेरणा स्तर के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान

परिकल्पना H_{02} का परीक्षण: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा

तालिका 6

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा की तुलना (स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण)

समूह	N	मध्यमान	मा.वि.	मध्यमान अंतर	SED	t	p	कोहेन d
ग्रामीण	100	133.61	17.22	4.40	2.28	1.93	0.055	0.27
शहरी	100	138.01	15.00					

नोट: df = 198; t का क्रांतिक मान .05 स्तर पर 1.97 तथा .01 स्तर पर 2.60। लेवेन परीक्षण: F = 2.60, p = 0.108 (प्रसरण समरूप)। स्रोत: शोधार्थी द्वारा संकलित प्राथमिक प्रदत्त

लेवेन परीक्षण (F = 2.60, p = 0.108) से स्पष्ट है कि दोनों समूहों के प्रसरण समरूप हैं, अतः समान प्रसरण वाला t-परीक्षण प्रयुक्त किया गया। तालिका 7 के अनुसार शहरी विद्यार्थियों का अभिप्रेरणा मध्यमान ग्रामीण विद्यार्थियों से 4.40 अंक अधिक है, परंतु प्राप्त t-मान 1.93 है जो .05 स्तर के क्रांतिक मान 1.97 से कम है (p = 0.055)। अतः शून्य परिकल्पना H_{02} स्वीकृत की जाती है। कोहेन d = 0.27 छोटा प्रभाव-आकार दर्शाता है। अर्थात दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा लगभग समान है। दोनों समूहों के अभिप्रेरणा एवं उपलब्धि मध्यमानों की तुलना आकृति 3 (क) एवं (ख) में दर्शाई गई है।

तालिका 7

क्षेत्र के अनुसार अभिप्रेरणा स्तरों का वितरण

अभिप्रेरणा स्तर	ग्रामीण (f)	ग्रामीण (%)	शहरी (f)	शहरी (%)
निम्न	22	22	11	11
औसत	65	65	75	75
उच्च	13	13	14	14
योग	100	100	100	100

नोट: χ^2 (2) = 4.42, p = .110 (.05 स्तर पर असार्थक)। स्रोत: शोधार्थी द्वारा संकलित प्राथमिक प्रदत्त

तालिका 8 में देखा जा सकता है कि निम्न अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थियों का अनुपात ग्रामीण क्षेत्र में (22%) शहरी क्षेत्र (11%) से अधिक है, जबकि उच्च अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थी दोनों क्षेत्रों में लगभग बराबर हैं (13% एवं 14%)। फिर

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

भी काई-वर्ग परीक्षण ($\chi^2 = 4.42$, df = 2, p = .110) के अनुसार यह वितरण-अंतर सार्थक नहीं है, जो H_{02} की स्वीकृति के अनुरूप है।

परिकल्पना H_{03} का परीक्षण: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि

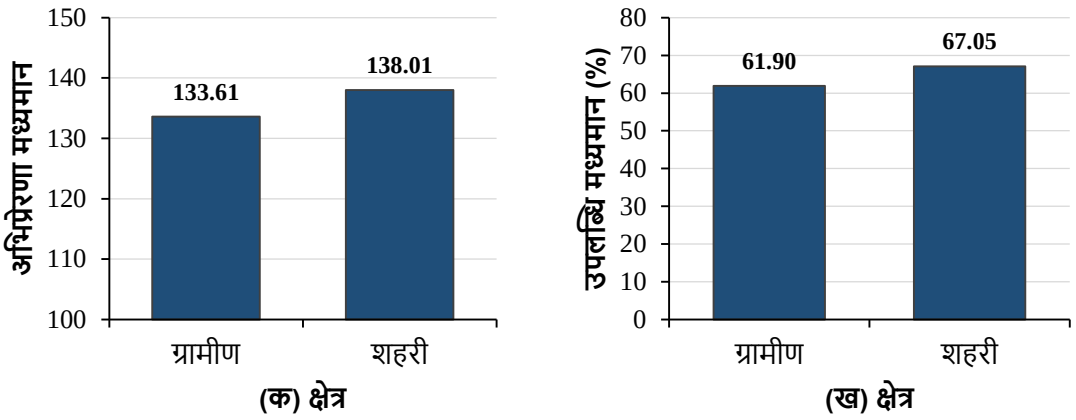
तालिका 8

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना (स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण)

समूह	N	मध्यमान (%)	मा.वि.	मध्यमान अंतर	SED	t	p	कोहेन d
ग्रामीण	100	61.90	11.05	5.15	1.54	3.35	0.001	0.47
शहरी	100	67.05	10.69					

नोट: df = 198; t का क्रांतिक मान .05 स्तर पर 1.97 तथा .01 स्तर पर 2.60। लेवेन परीक्षण: F = 0.44, p = 0.510 (प्रसरण समरूप)। स्रोत: शोधार्थी द्वारा संकलित प्राथमिक प्रदत्त

तालिका 9 के अनुसार शहरी विद्यार्थियों की औसत उपलब्धि 67.05 प्रतिशत और ग्रामीण विद्यार्थियों की 61.90 प्रतिशत है। दोनों के बीच 5.15 प्रतिशत अंकों का अंतर है। प्राप्त t-मान 3.35 है, जो .01 स्तर के क्रांतिक मान 2.60 से अधिक है (p = 0.001)। अतः शून्य परिकल्पना H_{03} अस्वीकृत की जाती है। कोहेन d = 0.47 लगभग मध्यम प्रभाव-आकार का संकेत देता है। स्पष्ट है कि शैक्षिक उपलब्धि में शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों से सार्थक रूप से आगे हैं (आकृति 3 ख)।



आकृति 3: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की (क) शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं (ख) शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान

तालिका 9

क्षेत्र के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि (प्राप्तांक प्रतिशत) का वितरण

उपलब्धि श्रेणी	ग्रामीण (f)	ग्रामीण (%)	शहरी (f)	शहरी (%)
60% से कम	45	45	30	30
60–74.9%	43	43	48	48
75% एवं अधिक	12	12	22	22
योग	100	100	100	100

नोट: χ^2 (2) = 6.22, p = .045 (.05 स्तर पर सार्थक)। स्रोत: शोधार्थी द्वारा संकलित प्राथमिक प्रदत्त

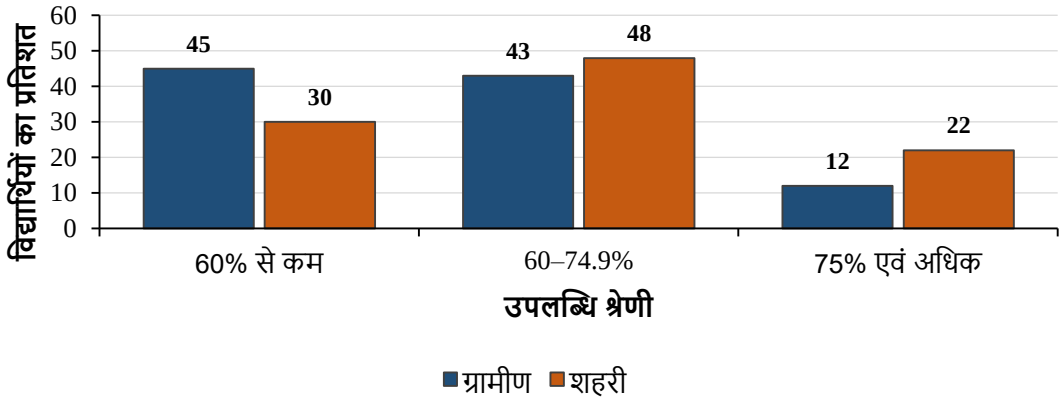
Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

तालिका 10 दर्शाती है कि 60 प्रतिशत से कम अंक पाने वाले विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र में 45 प्रतिशत हैं, जबकि शहरी क्षेत्र में केवल 30 प्रतिशत। इसके विपरीत 75 प्रतिशत या अधिक अंक पाने वाले शहरी विद्यार्थी (22%) ग्रामीण विद्यार्थियों (12%) से लगभग दोगुने हैं। काई-वर्ग परीक्षण ($\chi^2 = 6.22$, df = 2, p = .045) इस वितरण-अंतर को सार्थक बताता है (आकृति 4)।



आकृति 4: क्षेत्र के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि श्रेणियों का प्रतिशत वितरण

परिकल्पना परीक्षण का सारांश

तालिका 10

परिकल्पनाओं के परीक्षण का सारांश

परिकल्पना	सांख्यिकीय परीक्षण	प्राप्त मान	निर्णय
H_{o1}: अभिप्रेरणा एवं उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध नहीं	पियर्सन r; ANOVA	r = 0.440; F = 14.01, p < .001	अस्वीकृत
H_{o2}: ग्रामीण-शहरी अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं	t-परीक्षण	t = 1.93, p = 0.055	स्वीकृत
H_{o3}: ग्रामीण-शहरी उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं	t-परीक्षण	t = 3.35, p = 0.001	अस्वीकृत

स्रोत: शोधार्थी द्वारा संकलित प्राथमिक प्रदत्त

निष्कर्ष

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक, धनात्मक और मध्यम सहसम्बन्ध (r = 0.44) है।
2. उच्च अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि औसत और निम्न अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थियों से सार्थक रूप से अधिक है।
3. ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में .05 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है।
4. शैक्षिक उपलब्धि में शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों से सार्थक रूप से आगे हैं।

विवेचना

अभिप्रेरणा और उपलब्धि के बीच धनात्मक सम्बन्ध का परिणाम आत्म-निर्धारण सिद्धांत (डेसी एवं रायन, 1985) तथा प्रत्याशा-मूल्य सिद्धांत (विगफील्ड एवं एक्लेस, 2000) दोनों के अनुरूप है। स्टाइनमायर एवं स्पिनाथ (2009) के

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

निष्कर्ष भी यही बताते हैं कि अभिप्रेरणा उपलब्धि का एक स्वतंत्र पूर्वकथक है। फिर भी उपलब्धि के प्रसरण का शेष भाग शिक्षण गुणवत्ता और पारिवारिक परिस्थितियों जैसे अन्य कारकों से जुड़ा है (हैटी, 2009)।

ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर न मिलना इस धारणा को चुनौती देता है कि ग्रामीण विद्यार्थी पढ़ाई में कम रुचि रखते हैं। यह परिणाम पयन्नाट एवं मणिचंदर (2012) के निष्कर्ष से भिन्न है, जिन्होंने केरल में सार्थक अंतर पाया था। यह भिन्नता क्षेत्रीय संदर्भ, मापन उपकरण (उपलब्धि-अभिप्रेरणा बनाम शैक्षिक अभिप्रेरणा) और समय के अंतर के कारण हो सकती है।

दूसरी ओर, उपलब्धि में शहरी विद्यार्थियों का आगे रहना सिरिन (2005) और असर सेंटर (2023) के निष्कर्षों से मेल खाता है, जो सामाजिक-आर्थिक स्थिति और विद्यालयी संसाधनों को उपलब्धि का महत्वपूर्ण निर्धारक मानते हैं। सेनगुप्ता एवं गुच्छाइत (2024) ने भी दिखाया कि घरेलू वातावरण, घरेलू कार्यों का बोझ और विद्यालय की गुणवत्ता ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक परिणामों को प्रभावित करते हैं। परमार (2017) के छोटे न्यादर्श (N = 60) में यह अंतर न मिलना कम सांख्यिकीय शक्ति के कारण हो सकता है (कोहेन, 1988)।

इन दोनों परिणामों को साथ रखकर पढ़ने पर एक महत्वपूर्ण बात सामने आती है: ग्रामीण विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा लगभग शहरी विद्यार्थियों जितनी ही है, परंतु वह अभिप्रेरणा उसी अनुपात में उपलब्धि में नहीं बदल पा रही। विषय-शिक्षकों की कमी, पुस्तकालय और प्रयोगशाला का अभाव तथा घर पर शैक्षिक सहायता न मिलना इस अंतर के सम्भावित कारण हैं।

शैक्षिक निहितार्थ

- शिक्षकों को कक्षा में आन्तरिक अभिप्रेरणा बढ़ाने वाली विधियाँ अपनानी चाहिए, जैसे गतिविधि-आधारित शिक्षण।
- निम्न अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थियों की पहचान सत्र के आरम्भ में कर उन्हें परामर्श और अभिभावकों के सहयोग से सहायता दी जानी चाहिए।
- ग्रामीण विद्यालयों में विषय-शिक्षकों की नियुक्ति, पुस्तकालय, विज्ञान प्रयोगशाला और डिजिटल अधिगम संसाधनों को प्राथमिकता देनी चाहिए, ताकि विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा उपलब्धि में बदल सके।

भावी शोध हेतु सुझाव

- यह अध्ययन अन्य जिलों और राज्यों में बड़े न्यादर्श पर दोहराया जा सकता है।
- लिंग, विद्यालय के प्रकार (शासकीय/अशासकीय) और सामाजिक-आर्थिक स्थिति को अतिरिक्त चरों के रूप में सम्मिलित कर द्विमार्गी या बहुमार्गी प्रसरण विश्लेषण किया जा सकता है।
- आन्तरिक अभिप्रेरणा, बाह्य अभिप्रेरणा और अभिप्रेरणा-हीनता के उप-आयामों का उपलब्धि से अलग-अलग सम्बन्ध जाँचा जा सकता है।

संदर्भ सूची

एक्लेस, जे. एस., एवं विगफील्ड, ए. (2002). मोटिवेशनल बिलीफ्स, वैल्यूज़, एंड गोल्स. *एनुअल रिव्यू ऑफ साइकोलॉजी, 53*, 109–132. https://doi.org/10.1146/annurev.psych.53.100901.135153

एटकिंसन, जे. डब्ल्यू. (1964). *एन इंट्रोडक्शन टू मोटिवेशन*. वैन नॉस्ट्रैंड.

कोठारी, सी. आर. (2004). *रिसर्च मेथडोलॉजी: मेथड्स एंड टेक्नीक्स* (द्वितीय संशोधित संस्करण). न्यू एज इंटरनेशनल.

कोहेन, जे. (1988). *स्टैटिस्टिकल पावर एनालिसिस फॉर द बिहेवियरल साइंसेज़* (द्वितीय संस्करण). लॉरेंस एर्लबाम एसोसिएट्स.

गैरेट, एच. ई. (1981). *स्टैटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एंड एजुकेशन*. वकील्स, फेफर एंड साइमन्स.

डेसी, ई. एल., एवं रायन, आर. एम. (1985). *इंट्रिंसिक मोटिवेशन एंड सेल्फ-डिटरमिनेशन इन ह्यूमन बिहेवियर*. प्लेनम प्रेस.

पयन्नाट, पी., एवं मणिचंदर, टी. (2012). अचीवमेंट मोटिवेशन अमंग सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन एर्नाकुलम डिस्ट्रिक्ट: ए स्टडी. *रिसर्च नेबुला, 1*(3), 26–29.

परमार, एफ. पी. (2017). एकेडमिक अचीवमेंट अमंग सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू एरिया. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 4*(4). https://doi.org/10.25215/0404.015

फील्ड, ए. (2013). *डिस्कवरिंग स्टैटिस्टिक्स यूज़िंग आईबीएम एसपीएसएस स्टैटिस्टिक्स* (चतुर्थ संस्करण). सेज.

बंडूरा, ए. (1997). *सेल्फ-एफिकेसी: द एक्सरसाइज़ ऑफ कंट्रोल*. डब्ल्यू. एच. फ्रीमैन.

बेस्ट, जे. डब्ल्यू., एवं कान, जे. वी. (2006). *रिसर्च इन एजुकेशन* (दशम संस्करण). पियर्सन एजुकेशन.

मंगल, एस. के. (2002). *एडवांस्ड एजुकेशनल साइकोलॉजी* (द्वितीय संस्करण). प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार.

मास्लो, ए. एच. (1943). ए थ्योरी ऑफ ह्यूमन मोटिवेशन. *साइकोलॉजिकल रिव्यू, 50*(4), 370–396. https://doi.org/10.1037/h0054346

मैक्लेलैंड, डी. सी., एटकिंसन, जे. डब्ल्यू., क्लार्क, आर. ए., एवं लोवेल, ई. एल. (1953). *द अचीवमेंट मोटिव*. एप्लटन-सेंचुरी-क्रॉफ्ट्स.

रायन, आर. एम., एवं डेसी, ई. एल. (2000). इंट्रिंसिक एंड एक्सट्रिंसिक मोटिवेशन्स: क्लासिक डेफिनिशन्स एंड न्यू डायरेक्शन्स. *कंटेम्पररी एजुकेशनल साइकोलॉजी, 25*(1), 54–67. https://doi.org/10.1006/ceps.1999.1020

विगफील्ड, ए., एवं एक्लेस, जे. एस. (2000). एक्सपेक्टेंसी–वैल्यू थ्योरी ऑफ अचीवमेंट मोटिवेशन. *कंटेम्पररी एजुकेशनल साइकोलॉजी, 25*(1), 68–81. https://doi.org/10.1006/ceps.1999.1015

वेलेरैंड, आर. जे., पेलेटियर, एल. जी., ब्लेस, एम. आर., ब्रियर, एन. एम., सेनेकल, सी., एवं वैलियर्स, ई. एफ. (1992). द एकेडमिक मोटिवेशन स्केल: ए मेज़र ऑफ इंट्रिंसिक, एक्सट्रिंसिक, एंड एमोटिवेशन इन एजुकेशन. *एजुकेशनल एंड साइकोलॉजिकल मेज़रमेंट, 52*(4), 1003–1017. https://doi.org/10.1177/0013164492052004025

सिरिन, एस. आर. (2005). सोशियोइकोनॉमिक स्टेटस एंड एकेडमिक अचीवमेंट: ए मेटा-एनालिटिक रिव्यू ऑफ रिसर्च. *रिव्यू ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 75*(3), 417–453. https://doi.org/10.3102/00346543075003417

सेनगुप्ता, एस., एवं गुच्छाइत, एस. के. (2024). व्हाइल स्टेयरिंग अप: परसीविंग शेड्स ऑफ एकेडमिक मोटिवेशन ऑफ हाई स्कूल फर्स्ट-जनरेशन लर्नर्स एंड डिज़ायर्ड एकेडमिक आउटकम्स. *डिस्कवर एजुकेशन, 3*, लेख 212. https://doi.org/10.1007/s44217-024-00315-3

स्टाइनमायर, आर., एवं स्पिनाथ, बी. (2009). द इम्पॉर्टेंस ऑफ मोटिवेशन ऐज़ ए प्रेडिक्टर ऑफ स्कूल अचीवमेंट. *लर्निंग एंड इंडिविजुअल डिफरेंसेज़, 19*(1), 80–90. https://doi.org/10.1016/j.lindif.2008.05.004

हैटी, जे. (2009). *विज़िबल लर्निंग: ए सिंथेसिस ऑफ ओवर 800 मेटा-एनालिसिस रिलेटिंग टू अचीवमेंट*. रूटलेज.